गणतंत्र के जन्मदाता सम्राट श्री अग्रसेन

प्राचीन काल में जब कलियुग का सूत्रपात हो रहा था, वैश्य कुल में श्री देवल वल्लभ के घर एक होनहार पुत्र ने जन्म लिया, जो बड़ा वीर, पराक्रमी, विद्वान तथा नीतिकुशल था। उसका नाम अग्र था जो आगे चलकर महाराज अग्रसेन के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुआ। इसी ने विश्व में सर्वप्रथम सत्ता में गणतांत्रिक पद्धति, शासन में समाजवादी व्यवस्था तथा ट्रस्टीशिप का सूत्रपात किया। सच्चे अर्थों में महाराज अग्रसेन ही समाजवाद तथा गणतंत्र के जन्मदाता थे।

भारत देश में उस युग में जब कि समाज के सभी क्षेत्रों में क्षत्रियों तथा ब्रह्मणों का प्रचण्ड प्रभुत्व था, धर्म और कर्मकाण्ड के नाम पर, ज्ञान व विज्ञान के नाम पर, विद्या और बुद्धि के बल पर ब्राह्मणत्व अपना पूर्ण वर्चस्व बनाये हुए था तो क्षत्रिय–गण भी अपनी सत्ता के बल पर प्रभु बने हुए थे। ब्राह्मण – वर्ग सत्ताधारियों के गुण – गान करने में ही व्यस्त था तो सत्ता पक्ष केवल ब्राह्मणों को ही उनके ज्ञान – विज्ञान की उपलब्धियों के कारण मान्यता देता था। वैश्य – वर्ग, जो समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसके बिना समाज साधनहीन, श्री – हीन हो नष्ट हो सकता है, की घोर उपेक्षा की जा रही थी। वैश्य–वर्ग, जिसके धन – बल पर ही ब्राह्मणों के ज्ञान–विज्ञान के अन्वेषण तथा सत्ताधारियों के शासन की नींव टिकी हुई थी, इससे क्षुब्ध थाा।

हमारे सारे ही प्राचीन ग्रंथ क्षत्रियों एवं ब्राह्मणों की प्रशस्तियों से भरे पड़े हैं। कहीं भी किसी वैश्य – कुल – भूषण के लिऐ प्रशंसा के शब्द नहीं मिलते। वैश्य – वर्ग इस स्थिति से दुःखी था। उनके बड़े से बड़े बलिदान, त्याग का लाभ भी बढ़ाचढ़ा कर क्षत्रियों को व ब्राह्मणों को ही दिया जाता था। संख्या तथा वैभव में अधिक होते हुए भी, सभी प्रकार से योग्य और सक्षम होते हुए भी, यश – लाभ उनके स्थान पर अन्यों को मिले, यह कब तक सहा था। भीतर ही भीतर असंतोष बढ़ रहा था। इसे नेतृत्व का संबल दिया अग्रसेन ने। इस स्थिति का विरोध करने के लिए वे सर्व – प्रथम सबसे आगे आये।

व्यावसायिक दृष्टि से तो वैश्य वर्ग पहिले ही संगठित था। सैन्य–बल भी इसके पास था। वैश्य रण – कुशल एवं योद्धा भी थे। उनका व्यापार – व्यवसाय दूर–दूर देश देशान्तरों में चलता था। विपणन – कार्य समुद्र से भी होता था। माल व धन का एक स्थान से दूसरे स्थान पर परिवहन स्थल व जल – मार्गों से बड़ी संख्या में होता था। यह सब वैश्य स्वयं अपनी जोखिम पर ही करते थे। जंगली लुटेरों व जल – दस्युओं से वे स्वयं ही भिड़ते थे। उनके पास धन, बल व बुद्धि किसी बात की कमी नहीं थीं। कमी थी तो केवल राजनैतिक दृष्टिकोण से उन्हें संगठित करने की। यह कार्य किया अग्रसेन जी ने। उन्होंने समस्त वैश्यों को नये सिरे से संगठित कर अपना अलग संघ बनाया और नये राज्य की स्थापना की, एक ऐसा राज्य, जो वैश्य – वर्ग का अपना पृथक राज्य था, जिसमें समस्त शासन – तंत्र केवल वैश्यों के ही हाथ में था। सत्ता के सर्वोच्च पद, राजा से लेकर राज्य – कर्मचारी तथा जन – सेवक तक सभी वैश्य ही प्रजा, एक सर्वथा नये ढंग का, अनोखा तथा अभूतपूर्व राज्य जो चर्चा का विषय बन गया।

उस समय की राजनीति में यह एक विस्फोट था। तात्कालीन राजाओं व ब्रह्मणों के लिए यह एक चुनौती थी। विशेषकर क्षत्रियों को सत्ता पर अपना एकाधिकार सपाप्त होता दिखने लगा। उन्होने इस सत्ता को पलट देने के बहुतेरे प्रयत्न किये। युद्ध, छल और कपट सभी हथकण्डों को उन्होंने अपनाया, परन्तु अग्रसेन के कुशल नेतृत्व में पनपती वैश्य – शक्ति , धन, बल और बुद्धि के सामंजस्य के आगे वे हीन थे। उसके पास शक्ति थी, बुद्धि ब्राह्मणों की उनके साथ थी, परन्तु धन ? धन का प्रश्न बड़ा विकट था। वैश्यों के असहयोग के कारण उनकी आर्थिक स्थिति पतली हो रही थी। दासों और सेवकों पर कर लगा कर राज्यकोष नहीं भरे जा सकते थे। केवल कृषकों के सहारे युद्ध लड़ने के लिए साधन व सेना नहीं जुटाई जा सकती थी। अतः उन्हें मुंह की खानी पड़ी । देवलोक का राजा इन्द्र भी इस वैश्य – राज्य से न जीत

सका। उसने भी अग्रसेन से डर कर देवऋषि नारद को मध्यस्थ बनाकर उससे संधि कर ली। मित्रता के बंधन प्रगाढ़ बने रहें, इस हेतू इन्द्र ने अपने देश की एक श्रेष्ठ अप्सरा भी उन्हें भेंट कर दी। इससे अग्रसेन का वर्चस्व और भी बढ़ गया। हताश हो क्षत्रिय राजा – गण हाथ मलते, वैश्य – गण राज्य को, मौन रह बढ़ते, फलते – फूलते देखते रहे। अग्रसेन के सबल नेतृत्व में वैश्य – वर्ग का यह राज्य निरंतर साधन – संपन्न हो सुख – समृद्धि की ओर अग्रसर होता रहा। राज्य साम्राज्य बन गया। राजा अग्रसेन महाराजा अग्रसेन बने। ब्राह्मण – वर्ग धीरे – धीरे स्वयं ही नत हो झुक गया। महाराज अग्रसेन को मान्यता दे दी गई। ऋषि मुनि, विद्वान, पंडित, मनीषी उनकी सेवा में आने लगे तथा समुचित आदर – सम्मान पाकर तृप्त होने लगे।

सम्राट बन कर भी महाराज अग्रसेन ने समाज की प्रतिष्ठा को सर्वोपरि माना। अपने राज्य में समाजवाद की ही प्राण – प्रतिष्ठा की। 'सब संपत्ति समाज की' इस मान्यता की प्रतिस्थापित किया। उन्होनें नियम बना कर समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अधिकार प्रदान किये। सही माने में वे एक सच्चे समाजवादी सम्राट थे। उनके शासन में व्यवस्था इस प्रकार थीं :–

– मानव मानव में कोई भेद नहीं समझा जाता था।

– धन, व्यवसाय, जन्म, जाति, वर्ण, कुल अथवा धर्म के नाम पर कोई ऊंच – नींच या छोटा बड़ा नहीं था।

– खेती द्वारा अन्न उत्पन्न करने वालों को सम्मान दिया जाता था।

– जीव – हत्या व बलि – प्रथा कानूनन अपराध थीं।

– गो– पालक कर गो – वंश की वृद्धि व उन्नति करना श्रेष्ठ माना जाता था।

– वाणिज्य – व्यवसाय में सबको सुख पहुंचाने का ध्येय तथा ईमानदारी का पूरा ध्यान रखा जाता था।

– नवागन्तुकों, किसी कारण से आर्थिक से हीन हो जानें वालों, वयस्क होने पर पृथक होकर नये सिरे से जीवन – यात्रा प्रारंभ करने वालों तथा नये व्यवसाय चलाने वालों को प्रत्येक घर से एक सिक्का तथा एक ईंट देकर सबके समान स्तर पर लाने की अनोखी व उदार परम्परा प्रचलित थी।

– प्रत्येक नागरिक को आदेश थे कि वह अपनी आय को चार भागों में विभक्त कर पहला भाग जीव – कल्याण तथा समाज के हित में लगाये, दूसरा भाग व्यवसाय, कृषि आदि में लगाये, तीसरा भाग गृहस्थी की व्यवस्था के लिए व्यय करे व चौथा भाग भविष्य के लिए संचित करें।

इस प्रकार सभी प्रकार से एक संपूर्ण समाजवादी साम्राज्य की स्थापना करके उन्होने विश्व के समक्ष एक नया आदर्श प्रस्तुत किया तथा समाजवादी व्यवस्था की नींव रखी। इसी नये तथा महान कार्य का सूत्रपात करने के कारण महाराज अग्रसेन श्री विष्णु अग्रसेन के नाम से विभूषित किये गये। इनकी सन्तति अग्र, आग्रेय तथा अग्रवाल नाम से विख्यात हुई।